अ ध्या य - 1

उपन्यासकार उषा प्रियंवदा

आधुनिक युग के साहित्यकारों में उषा प्रियंवदा का अपना एक विशेष स्थान है । उषाजी के अब तक तीन उपन्यास प्रकाशित हुए है । उनकी अनेक कहानियाँ हिन्दी पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित हुयी है । "जिंदगी और गुलाब के फूल," "एक कोई दूसरा," "कितना बड़ा झूठ," "फिर वसन्त आया" और "मेरी प्रिय कहानियाँ" ये उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं ।

उनके प्रमुख तीन उपन्यास "पचपन खम्भे लाल दीवारें," "रूकोगी नहीं, राधिका?" और "शेषयात्रा" ये हैं । साठवे दशक के स्थापित कथाकारों में एक अग्रणी नाम उषा प्रियंवदा का है, जो पिछले कई वर्षों से अमरिका में बसी है । वहाँ की कृत्रिम जिंदगी के बावजूद वे आज भी संवेदनात्मक रूप में अपने देश की जमीन से जुड़ी हुई है ।

उषा जी ने अपने उपन्यासों की सृष्टि एक विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर की है । उनमें उन्होंने नारी के अंतर्जगत की गहराई का सूक्ष्म चित्रण किया है । नारी विकास के आज के युग में नारी की समस्याएँ केवल उसके बाह्य भौतिक जगत् से ही संबंधित नहीं हैं तो उसका अंतर्जगत् भी आज एक विशाल और विस्तृत पश्चिपार्श्व के साथ, अनेकविध सूक्ष्म और जटिल समस्याओं से आपूरित हो गया है । नारी के इस अंतर्जगत् में गहराई से पैठकर, उसके मन की हर लहर को अपनी लेखनी द्वारा अंकित करने का सफल प्रयास उषाजी के उपन्यासों में दिखाई देता है । उर्मिला गुप्ता जी का उनके कहानियों के बारे में यह कथन "सुश्री उषाजी ने जो कथा-चित्र प्रस्तुत किए हैं, उनमें व्यक्ति की कुंठाओं, पीड़ाओं, अतृप्त आकांक्षाओं आदि को ही दृष्टि में रखा गया है । नारी होने पर भी सुखी और स्वस्थ गार्हस्थ जीवन के चित्र उनकी लेखनी से अंकित नहीं हुए, यह आश्चर्य की बात है ।"[1] उनके उपन्यासों के लिए भी लागू पड़ता है ।

एक नारी होने के कारण ही उषाजी अपने नारी पात्रों का सूक्ष्म और वास्तविक चित्रण कर पाई है । नारी की बदलती हुयी मान्यताओं, विश्वासों और परिस्थितियों को, पुरूष लेखकों की अपेक्षा अधिक सही धरातल पर प्रस्तुत करने में उषाजी ने महत्वपूर्ण योग दिया है । उनके उपन्यासों की नायिकाएँ इतनी सजीव बनकर हमारे सामने आती है कि अनजाने में उससे हमारा गहरा लगाव स्थापित हो जाता है । ये नायिकाएँ हमें

...2.

चिरपरिचित लगती है। नारी के भावजगत् का भावपूर्ण चित्र उषाजी ने इस सामर्थ्य के साथ खिंचा है कि उनके उपन्यासों के पात्रों के उल्लास, आनंद, निराशा, दुख के साथ-साथ पाठक भी डूबता-उतरता चला जाता है। नारी के द्वारा हुआ यह नारी दर्शन प्रशंसनीय है। इस संदर्भ में डॉ. श्रीमती उमेश माथुर लिखती है - "साहित्य के विकास में नारी का योग उसके भावात्मक जगत के अस्तित्व की कहानी है जिसे कभी उसने मौन होकर कहा और कभी व्यक्त शब्दमयरूप में।"[2]

"पचपन खम्भे लाल दीवारें" इस उपन्यास में उषा जी ने नारियों के विभिन्न पहलूओं को चित्रण किया है। यह चित्रण नारियों के स्वभाव और वृत्तियों का एक यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास के कथानक को नाटकीय सज्जा प्रदान करने के लिए ही लेखिका ने यह चित्रण किया है, परंतु यहाँ पर वातावरण निर्मिति से अधिक नारी जीवन और नारी स्वभाव का चित्रण ही महत्वपूर्ण और प्रभावोत्पादक बन गया है। इस संबंध में उर्मिला गुप्ता का यह कथन उल्लेखनीय है। "कथानक का मुख्य कार्यक्षेत्र कॉलेज का होस्टल है, और छात्राओं की उपद्रवी हरकतों (शिक्षिकाओं के कमरों में झाँकना या उनके खाने के टिफिन में मेंढक भर देना), शिक्षिकाओं के आचरण और व्यक्तिगत जीवन की विविधताओं (किसी का प्रेम-विवाह, किसी का केवल प्रेमी से ही संतुष्ट रहकर विवाह न करना, किसी की पर-निन्दा की प्रवृत्ति आदि) के चित्रण द्वारा लेखिका ने वातावरण को सफलता से उभारा है। उनके द्वारा प्रस्तुत यह वातावरण इतना सजीव है कि समस्त दृश्य मूर्त हो उठते हैं और लेखिका के निजी अनुभव की ओर संकेत करते हैं। परिस्थिति-प्रताड़ित, विवाह-सुख से वंचित कुमारी के अन्तर्द्वंद्व का चित्रण इस कृति का एकमात्र लक्ष्य है, जिसमें उषाजी को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। नारी होने के नाते उन्होंने नायिका के मनोभावों को गहराई से परखा है और अत्यंत कुशलता से उन्हें कथासूत्र में गूँथकर प्रस्तुत किया है।"[3]

उषाजी ने अपने उपन्यासों में कई जगह पर अपने जीवन के निजी अनुभवों का वर्णन पात्रों के माध्यम से किया है। अपने पात्रों का निर्माण उषाजी ने बहुत कुछ अपने जीवन की घटनाओं के आधार पर किया है। इसीलिए उनके उपन्यास की कथा और कथ्य सहज और स्वाभाविक लगता है। उपन्यास निर्मिति की प्रक्रिया इसीलिए एक आत्मस्फूर्त कृति बन गयी है। वे अपने उपन्यास "रूकोगी नहीं, राधिका ?" के

संस्मरण में लिखती है, " एक बार शुरू करने पर मैंने पाया कि मुझे दूर तक नहीं जाना पड़ा, वही बरसाती राधिका का फ्लैट बन गयी और मेरे बचपन की प्रिय चीजें और परिचित शहर राधिका का परिवेश । ... अब मुझे लगता है कि यदि मेरे आगे डेट लाइन न होती तो मैं "रूकोगी नहीं-" को सँवार देती, काफी कुछ रिवाइज कर सकती । मैंने राधिका के साथ न्याय नहीं किया पर इसका एक दूसरा पहलू भी है, हर बार भारत आने पर मैं वही अनुभूतियाँ जीती हूँ जिन्हें मैंने राधिका में डाला । राधिका, उसकी भावभूमि, उसके विचार, उसके मानदण्ड, उसकी संवेदनाएँ, उसकी रूचियाँ, उसका विद्रोह यह सब मेरे अन्दर शायद बरसों से संचित होता आ रहा था । राधिका का निपट अकेलापन और भारत में अपने को उखड़ा-उखड़ा पाना, मेरी अपनी अनुभूतियाँ थी, जिन्हें कि बेहद लाड़ प्यार के बावजूद भी मैं नकार नहीं सकी थी । राधिका का एकदम अकेले रहना मेरा अपना व्यक्तव्य था । राधिका का अपने पिता से गहरा लगाव शायद सबकांशस में मेरा भारत से अटूट लगाव था, जिसने मुझे पाँच साल लगातार व्यग्र रखा था, राधिका की अपराध भावना मेरी कसक थी और अन्त में राधिका का अपने पिता के प्रभाव से मुक्त हो जाना शायद मेरा भारत और परिवार से जुड़ी एक अम्बिलिकल कार्ड को काटने का प्रयत्न था ।

पर लिखते समय मुझे इन सब बातों का भास न था, यह सब मैंने "राधिका" का अंग्रेजी अनुवाद करते समय और लम्बे अरसे के इन्ट्रोस्पेक्शन के दौरान अनुभव किया और तभी मुझे लगा कि अरे मैं कितनी निरावरण होकर पन्नों पर बिखर गयी हूँ ।"[4]

उषाजी के नारी पात्रों की कुछ खास विशेषताएँ है । उनकी नायिकाएँ । आज के प्रगतिशील, पाश्चात्य प्रभाव से युक्त, नागरी संस्कृति में पली हुई शिष्ट एवं सभ्य समाज की एक झकाई है । वें सभी माइने में बीसवी सदी की आधुनिक नारी है । अपने निष्कर्ष पर, निश्छल आचार और विचारों से उनके परिष्कृत और उदात्त अंतरंग की झलक दिखाई देती है । वें सुसंस्कृत परिवार की, उच्च-शिक्षा प्राप्त युवतियाँ हैं । भावनाओं की दृष्टि से भी वें समृद्ध हैं । किसी न किसी प्रकार से वें आधुनिक जगत् की कलात्मक अभिरूचियाँ, पार्टी, विदेश-यात्रा आदि के संदर्भ में देखी जाती हैं ।

उषाजी के नारी पात्रों की मानसिक भावनाओं के गति के साथ ही कथा का विकास होता जाता है । उर्मिला गुप्ता लिखती है - "उनके पात्रों की वृत्तियाँ

अन्तर्मुखी हैं । उन्होंने वर्तमान नारी की जीवन समस्याओं को विशेष आग्रह से चित्रित किया है और यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि आज की भारतीय नारी प्राचीन नारी की भाँति त्याग अथवा तप का जीवन व्यतीत न करके व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सर्वाधिक आकांक्षा रखती है। इसीलिए माया (छुट्टी का दिन), तारा (पूर्ति), और सुमित्रा (दो अँधेरे) स्वतंत्र रूप से अर्थोपार्जन करके यह समझती है कि अब उन्हें किसी पुरुष के आश्रय की आवश्यकता नहीं रही, किन्तु उस स्थिति में भी क्या वे प्रसन्न रह पाती है ? वे अपने मन में जिस रिक्तता और एकरसता का अनुभव करती है, लगभग वही दशा कौशल्या (दो अँधेरे) और चन्दा (दृष्टिदोष) की है, क्योंकि वे विवाह करके भी इसलिए प्रसन्न नहीं रह पाती कि पुरुष के सुख के लिए अपनी इच्छाओं का बलिदान उनके मानस में क्षोभ, कुंठा, खीझ और हीन भाव को जन्म देता है । वस्तुतः नारी स्वातंत्र्यकी दुहाई देकर वर्तमान युग ने नारी के साथ अन्याय ही किया है । पहले वह अपने आदर्शों की छाया में प्रत्येक स्थिति में संतुष्ट रहती थी और अपने उदात्त गुणों द्वारा श्रद्धा की पात्रा थी । किन्तु अब कोई भी स्थिति उसे अपने अनुकूल प्रतीत नहीं होती । किन्तु आज "सुसंस्कृत" नारी ("कँटीली छाह" में इन्द्रा, "वापसी" में गजाधर की पत्नी आदि) पति की अपेक्षा अपने सुख को अधिक महत्व देती है । ... पुरुष पात्रों की सृष्टि नारियों के चरित्र-चित्रण के लिए ही हुई है ।"[5]

मूल्यांकन

उषाजी एक सफल कहानीकार एवं उपन्यासकार है । उषाजी का साहित्य प्रायः नारी जीवन के अनेक पहलुओं को उजागर करता है एवं नारी जीवन के अनेक अछूते एवं आच्छन्न अंगों पर प्रकाश डालता है । आधुनिक नारी का जीवन उसकी सारी जटिलता और समस्याओं के साथ उषाजी ने पाठकों के समक्ष इस स्वाभाविकता एवं सुगढ़ता से रखा है कि पाठक अनिवार्य रूप से नारी की समस्या और उसके भविष्य के प्रति आतंकीत होकर सोचने लगता है तथा समाधान को ढूँढने का प्रयास करने लगता है । एक लेखिका होने के नाते उषाजी की यही साहित्यिक सफलता मानी जा सकती है ।

...5.